टिकट अलबम

पाठ का सार / प्रतिपाद्य -

प्रसतुत पाठ 'टिकट अलबम' की लेखिका 'सुन्दरा रामस्वामी' जी हैं। नागराजन और राजप्पा इस कहानी के दो मुख्य पात्र हैं। दोनों एक ही विद्यालय में पढ़ते हैं। दोनों को अलग-अलग देशों के टिकट इकट्ठा करना अच्छा लगता था। राजप्पा के पास एक टिकट अल्बम था। वह उसमें विभिन्न देशों के टिकट इकट्ठी किया करता था। एक बार नागराजन के मामा ने सिंगापुर से उसके लिए एक अलबम भेजा। नागराजन ने उस अलबम में अलग-अलग देश के टिकट इकट्ठा कर के लगाना शुरू किया। वह अलबम बहुत सुन्दर था। इसलिए सभी उस अलबम को देखना चाहते थे। सभी उस अल्बम की प्रसंशा किया करते थे। यह देखकर राजप्पा को बिलकुल भी अच्छा नहीं लगता। नागराजन के अलबम से पहले लोग राजप्पा के अलबम की प्रसंशा किया करते थे। नागराजन के टिकट अलबम के आने के बाद राजप्पा के अलबम की लोकप्रियता में कमी आ गई थी। इसी कारण राजप्पा नागराजन के अलबम को नापसंद करता था। उसे यह अच्छा नहीं लगता था कि सभी उसे छोड़कर नागराजन और उसके अलबम की प्रसंशा किया करते थे। अनततः एक दिन राजप्पा के मन में नागराजन के अलबम को देखने की इच्छा हुई। संयोगवश उस समय घर पर नागराजन नहीं था। समय का सुअवसर पाकर राजप्पा के मन में कुटिल भावना का उदय हुआ। उसने नागराजन का अलबम चुरा लिया और अपने घर ले आया। लेकिन पकड़े जाने के डर से उसने बिना कुछ सोचे समझे अलबम को जला दिया। इस घटना के तुरंत बाद ही नागराजन राजप्पा से मिलने उसके घर आता है। नागराजन को दुःखी देखकर राजप्पा को अपनी भूल की अनुभूति हुई। प्रायश्चित करने के लिए उसने अपना प्रिय टिकट अलबम नागराजन को दे दिया। राजप्पा के साथ अन्याय करने का दुःख टिकट अलबम को खोने के दुःख से अधिक था। राजप्पा ने नागराजन के साथ जो अन्याय किया था उसकी सज़ा उसने स्वयं को दे दी थी।

राजप्पा की चारित्रिक विशेषताएँ -

(1) धैर्यहीन – यद्यपि राजप्पा एक समझदार बालक था; लेकिन उसमें धैर्य की कमी थी। अपनी इसी कमी के कारण उसने बिना सोचे समझे नागराजन का अलबम जला दिया और नागराजन के अलबम के साथ-साथ अपना अलबम भी खो दिया।

(2) क्रोधी – राजप्पा का स्वभाव क्रोधी था। क्रोधवश ही उसने नागराजन का अलबम चुराया। यद्यपि उसे जल्दी ही अपनी भूल का पश्चाताप भी हुआ।

(3) न्यायप्रिय – राजप्पा ने भले ही नागराजन का टिकट अलबम चुराकर अपराध किया था; लेकिन अपनी भूल की अनुभूति होते ही उसने नागराजन को अपना टिकट अलबम दे दिया। इस प्रकार उसने स्वयं को सज़ा देकर नागराजन के साथ न्याय किया।

पाठ का उद्देश्य -

प्रस्तुत पाठ के माध्यम से लेखक ने मानव स्वभाव का परिचय दिया है। स्वयं से अच्छा किसी को न देख पाना स्वाभाविक है। हम यही चाहते हैं कि हमारे पास जो कुछ भी हो सर्वोत्तम हो। परंतु सही समय पर इस परिस्थिति से स्वयं को निकालना भी आवश्यक है।

पाठ का संदेश -

पाठ के माध्यम से लेखक ने न्याय के महत्व को बताया है। जल्दबाज़ी में क्रोधवश कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से हमें कोई लाभ नहीं होता।